अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान

मानसगंगोत्री, मैसूर-06, भारत

(स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्थान, भारत सरकार)

आई एस ओ 9001:2015 प्रमाणन सम्प्राप्त

+91-0821 2502000 / 2502100

director@aiishmysore.in

aiishmysore.in

CONTACT US

सामग्री विकास और डिजाइन
सामग्री विकास विभाग

द्वारा संपादित
डॉ। एशोदा के.
वाक् विज्ञान में सह–प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष – सामग्री विकास

मुख्या संपादक
प्रो एम। पुष्पावती
निदेशक
अखिल भारतीय वाक् और श्रवण संस्थान

वर्ष: 2020-21
SH/DMD/Content dev. /2020-21
Rv. No.01/2022/23

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान वाक् और श्रवण के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने वाला एक प्रमुख संस्थान है। संप्रेषण विकृतियों और पुनर्वास सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए एक स्वायत्त संगठन के रूप में 9 अगस्त, 1966 को स्थापित किया गया। संस्थान, मैसूर में 32 एकड़ (दो परिसर) के विशाल क्षेत्र पर स्थित है। इसमें अत्याधुनिक सुविधाएं और उपकरण, सेवार्थियों और सामंजस्य विकृतियों से संबंधित क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला में अनुसंधान करने के लिए संसाधन है।

प्रमुख उद्देश्य

संस्थान के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित प्रदान करना है:

- पेशेवर प्रशिक्षण
- नैदानिक सेवाएं
- संबंधित विकृतियों जैसे श्रवण दोष, मानसिक मंदता, आवाज, प्रवाह और ध्वनि संप्रेषण तथा भाषा संबंधी विकृतियों से संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान करना और जनता को शिक्षित करना।

जनशक्ति विकास

संस्थान,संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में क्षमता निर्माण के उद्देश्य से,18 कार्यक्रम प्रदान करता है। जनशक्ति संतति (उत्पादन) संस्थान के प्रमुख उद्देश्यों में से एक होने के नाते, अ.भा.वा.श्र.सं. संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्रों में कुशल और विशेष जनशक्ति की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिप्लोमा से लेकर पोस्टडॉक्टरेट डिग्री तक विविध शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करता है।

यह विवरणिका क्यों?

यह विवरणिका पाठक को अ.भा.वा.श्र.सं. के शैक्षणिक जीवन का विचार देने के लिए डिज़ाइन की गयी है; और यह भी बताती है कि संस्थान को संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में शीर्ष संस्थानों में से एक क्यों माना जाता है। अखिल भारतीय वाक्

श्रवण संस्थान में हमारे लिए हमारे छात्र प्रमुख प्राथमिकता रखते हैं।

हम परिसर में उनके शिक्षण अधिगम और रहन–सहन के अनुभव को समृद्ध बनाने का प्रयास करते हैं,जो शिक्षा का उच्चतम गुणवत्ता वाला समृद्ध अनुभव है। अ.भा.वा.श्र.सं. गुणवत्ता से परिपूर्ण पेशेवरों को निखारने के लिए प्रतिबद्ध है जो व्यक्तियों के पुनर्वास संबंधित चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए संप्रेषण अक्षमताओं को दूर कर सकते हैं। हम उच्च मानदंड निर्धारित करते हैं ताकि प्रशिक्षित पेशेवरों के भावी खेप हमेशा नई ऊंचाइयों तक पहुंचने का लक्ष्य रखें। आजीविका के रूप में इस पेशे की आपकी पसंद अत्यधिक मूल्यवान है।

संस्थान को विश्वास है कि संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों की सेवारत आपकी सोच को संस्थान के संकाय और कर्मचारियों के कुशल मार्गदर्शन में महसूस किया जाएगा। अ.भा.वा.श्र.सं परिवार संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के जीवन को प्रकाशमय करने के लिए और हमारे प्रयास में शामिल होने लिए आपका स्वागत करता है।

ये किस प्रकार के पाठ्यक्रम हैं?

यह संप्रेषण विकृतियों के मूल्यांकन, निदान, उपचार और प्रबंधन के विषय में है। वाक् और श्रवण सिद्धियाँ उस डिग्री का अध्ययन करने का सही माध्यम है जो आप चाहते हैं कि आपको एक प्रभावशाली जीवन वृत्ति के लिए सक्षम बना सके। डिप्लोमा से लेकर डॉक्टरेट की डिग्री तक के लिए विस्तृत पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

यह अध्ययन मुझे कहां ले जा सकता है?

श्रवणविज्ञानी और वाक् भाषा पैथोलॉजिस्ट, अस्पतालों, चिकित्सालयों, नर्सिंग होम में और अनिर्दिष्ट निजी अभ्यास सेटिंग में स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली का अभिन्न अंग हैं। अ.भा.वा.श्र.सं. में उदार शिक्षा आपको अपने जुनून को बनाए रखने के लिए लचीलापन, ज्ञान और समझदारी प्रदान करती है। तथा, यह आपको विविधता, परिवर्तन और जटिलता से निपटने का अधिकार भी देती है जो आपको अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों के करीब लाता है।

हम क्या प्रस्ताव देते हैं?

डिप्लोमा कार्यक्रम

- श्रवण यंत्र और इयरमॉल्ड प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा (डीएचए एवं ईटी)
- प्रारंभिक विशेष शिक्षा में डिप्लोमा (श्रवण हानि) (डीइसीएसइ, एचआई)
- श्रवण,भाषा एवं वाक् में डिप्लोमा (डीएचएलएस)– अर्ध दूरस्त प्रणाली के माध्यम से

अवर स्नातक कार्यक्रम

- श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा विकृति विज्ञान के स्नातक (बी.एएसएलपी)
- विशेष शिक्षा में शिक्षा स्नातक (श्रवण हानि) {बी.एड.स्पे.एड.(एचआई)}

स्नातकोत्तर कार्यक्रम

- एम.एससी (श्रवणविज्ञान)
- एम.एससी (वाक् भाषा दोष विज्ञान)
- विशेष शिक्षा में शिक्षा के स्नात्कोत्तर (श्रवण हानि {एम.एड.स्पे.एड.(एचआई)}

पीएच.डी कार्यक्रम

- पीएच.डी (श्रवण विज्ञान, वाक् भाषा दोष विज्ञान, वाक् एवं श्रवण, भाषा विज्ञान, एवं विशेष शिक्षा)
- पोस्टडॉक्टोरल अधिछात्रवृत्ति (श्रवण विज्ञान एवं वाक् भाषा दोष विज्ञान)

संस्थान छात्रों को उनके अभ्यास और दूसरों पर इसके प्रभावों के बारे में आलोचनात्मक और नैतिक रूप से सोचने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित करता है। ए आई आई एस एच के सभी कार्यक्रमों की समग्र संरचना सुसज्जित प्रयोगशालाओं के परिसर,सिद्दान्त,नैदानिक कौशल, अनुसंधान कौशल और क्षेत्र के प्रदर्शन का एक संयोजन है।

श्रवण यंत्र और ईयर मोल्ड प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा का उद्देश्य छात्रों को श्रवण यंत्रों के रखरखाव और मरम्मत के साथ–साथ ईयर मोल्ड प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण देना है। व्यावहारिक प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान देते हुए, प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार के श्रवण यंत्रों की मरम्मत और ईयर मोल्ड की तैयारी में अनुभव दिया जाता है। इस कार्यक्रम के बाद, वे हियरिंग एड या इसके घटकों को बनाने वाली फर्मों और विपणन में कार्य कर सकते हैं।

प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में डिप्लोमा (श्रवण हानि) {डीइसीएसइ (एचआई)} 3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों और उनकी देखभाल करने वालों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है। वे प्रशिक्षित पूर्व–विद्यालय और पूर्व–शिक्षा कौशल में श्रवण हानि वाले बच्चों की मदद करने में सक्षम होंगे और पूर्वस्कूली शिक्षक, बाल कार्यकर्ता या शिक्षण सहायक के रूप में कार्य कर सकेंगे।

श्रवण, भाषा और वाक् (डीएचएलएस) में डिप्लोमा जनशक्ति उत्पन्न करने में सक्षम है जो मूल स्तर पर संप्रेषण विकृति वाले व्यक्तियों की जरूरतों को पूरा करता है।

अ.भा.वा.श्र.सं. में सिद्धांत कक्षाओं का संचालन वीडियो सम्मेलन के माध्यम से 8 अन्य अध्ययन केंद्रों में वास्तविक समय में किया जाता है और संबंधित केंद्रों पर नैदानिक प्रशिक्षण किया जाता है। प्रशिक्षु वाक्, निगलने और संप्रेषण विकृतिवाले व्यक्तियों के सहायक/ तकनीशियन के रूप में काम कर सकते हैं।

श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा दोष विज्ञान के छात्रों को सभी आयु समूहों के व्यक्तियों में संप्रेषण विकृतियों की पहचान, रोकथम, मूल्यांकन और प्रबंधन में प्रशिक्षित किया जाता है। प्रशिक्षण में नैदानिक शिक्षण पर ध्यान देने के साथ सैध्दांतिक और व्यावहारिक पहलू शामिल हैं। छात्रों को अनुभवी संकाय की देखरेख में अनुभव प्राप्त होता है।

बी.ए एस एल पी (श्रवण और वाक–भाषा दोष) सभी आयु समूहों के व्यक्तियों में संचार विकारों की पहचान, रोकथाम, मूल्यांकन और प्रबंधन करने में छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है। प्रशिक्षण में नैदानिक शिक्षण पर ध्यान देने के साथ सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू को भी महत्व दिया जाता है। छात्रों को अनुभवी संकाय की देखरेख में संप्रेषण विकृति वाले व्यक्तियों को चिकित्सा देने में अनुभव प्राप्त होता है।

ये स्नातक ईएनटी, बाल रोग, न्यूरोलॉजी, पुनर्वास चिकित्सा, वाक् और श्रवण केंद्र, श्रवण सहायत उद्योग, शैक्षणिक सेटअप आदि विभागों में अस्तपतालों में अभ्यास कर सकते हैं। वे स्वतंत्र रूप में श्रवण विज्ञान / वाक् भाषा दोष विज्ञान के भी अभ्यास कर सकते हैं।

बी.एस.एड. (श्रवण हानि) जो उम्मीदवार इस पाठ्यक्रम को चुनते हैं, वे श्रवण हानि और विशेष शिक्षकों के साथ बच्चों के पुनर्वास के तरीकों के विषय में सीखते हैं और एकीकृत व्यवस्था में कार्य कर सकते हैं।

एमएससी (ऑडियोलॉजी / स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजी) विशेष कार्यक्रम क्रमशः श्रवण विज्ञान और वाक् भाषा दोष विज्ञान के क्षेत्र में गहन ज्ञान और कौशल प्रदान करते हैं। ये पाठ्यक्रम श्रवण और वाक् प्रणाली के सामान्य पहलुओं के साथ–साथ श्रवण और वाक् भाषा विकृतियों के अंतर निदान और प्रबंधन के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते

हैं। छात्रों को अनुसंधान की आवश्यकताें की पहचान करने और अनुसंधान की योजना बनाने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है जो देश में नैदानिक, पुनर्वास और अनुप्रयुक्त अनुसंधान को उन्नत करने में मदद करेगा। पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल कॉलेजों, शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सालयों में और ग्रेड– I श्रवणविज्ञान और वाक् भाषा दोष विज्ञानि और शोधकर्ताओं के रूप में भी काम कर सकते हैं। वे स्वास्थ्य संबंधी देखभाल संस्थान, नर्सिंग सुविधाओं, पुनर्वास केंद्रों, चिकित्सा अस्पतालों /'चिकित्सालयों आदि में भी कार्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वे निजी अभ्यास भी कर सकते हैं।

एस.एस.एड. (श्रवण हानि) श्रवण हानि वाले बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में विशेष शिक्षकों को उन्नत स्तर का प्रशिक्षण देने का प्रयोजन रखता है। पाठ्यक्रम शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाने, नीतिगत निर्णय लेने और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में स्नातकोत्तर प्रशिक्षित के रूप में सेवा करने की जरूरतों को पूर्ण करता है।

श्रवणविज्ञान / वाक् – भाषा दोष विज्ञान में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) और वाक् और श्रवण, वाक् भाषा दोष विज्ञान, वाक् एवं श्रवण,भाषा विज्ञान एवं विशेष शिक्षा के विशेष क्षेत्रों में आयोजित की जाती है। ये कार्यक्रम संप्रेषण विकृतियों के क्षेत्र में लागू अनुसंधान की गुणवत्ता और मात्रा बढ़ाने की दिशा में सक्षम है। पीएचडी धारक एक नैदानिक व्यवस्था में मास्टर चिकित्सक, नैदानिक प्रशासक या अग्रणी के रूप में कार्य कर सकते हैं, नैदानिक अनुसंधान के सहयोगी और समर्थकों के रूप में एवं शैक्षणिक पटल में भी कार्य कर सकते हैं।

श्रवणविज्ञान / वाक् भाषा दोष विज्ञान (ऑडियोलॉजी/ स्पीच–लैंग्वेज पैथोलॉजी) में स्नाकोत्र–डॉक्टरल कार्यक्रम वाक् भाषा दोष विज्ञान और श्रवणविज्ञान (पोस्ट–डॉक्टरल प्रोग्राम स्पीच–लैंग्वेज पैथोलॉजी और ऑडियोलॉजी) के क्षेत्र में उच्च स्तरीय अनुसंधान की मांगों को पूरा करता है। कार्यक्रम उत्कृष्ट विशेष, केंद्रित और आवश्यकता आधारित अनुसंधान की दिशा में सक्षम है।

आधारिक संरचना

- मल्टीमीडिया सुविधाओं से लैस 22 अध्ययन कक्ष।
- संगोष्ठी भवन में 180 की बैठने की क्षमता और सभागार में 400 की बैठने की क्षमता है।
- डीएचएलएस कार्यक्रम के लिए 08 केंद्रों से जुड़े दो–तरफा ऑडियो–वीडियो के साथ वीडियो सम्मेलन प्रणाली
- अंतरंग और बहिरंग मंच, जिम, अंतरंग खेलों के साथ जिमखाना।

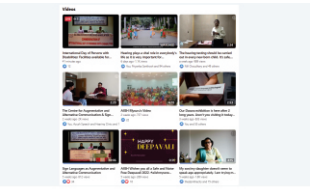

- लड़कियों और लड़कों के लिए छात्रावास
- अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालय और सूचना केंद्र
- नैदानिक अभ्यास के लिए सीसीटीवी निगरानी के साथ बहुत अच्छी नैदानिक सुविधा।
- योग्य संकाय और अन्य तकनीकी कर्मचारी

एक उत्कृष्ट जीविका चुनकर प्रभाव बनाएं और संप्रेषण विकृतियों वाले व्यक्तियों के जीवन को बदलने में एक हिस्सा बनें।

***

शैक्षणिक कार्यक्रम

क्र सं	कार्यक्रम	अवधि	सीटों की संख्या	चयन का माध्यम	पात्रता	छात्रवृत्ति/शैक्षिक प्रतिमाह (रुपये में)
डिप्लोमा कार्यक्रम						
1	डिप्लोमा इन हियरिंग ऐड एंड ईयर मोल्ड टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	28	अर्हकारी परीक्षा में योग्यता	12 वीं / II पीयूसी / डिप्लोमा इन /इलेक्ट्रॉनिक्स / ईटीआई)**	250
2	डिप्लोमा इन अर्ली चाइल्डहुड स्पेशल एजुकेशन (हियरिंग इम्पेयरमेंट)	1 वर्ष	28	अर्हकारी परीक्षा में योग्यता	12 वीं / II पीयूसी **	250
3	डिप्लोमा इन हियरिंग, लैंग्वेज एंड स्पीच - विडियो सम्मेलन के माध्यम से	1 वर्ष	28 प्रति अध्ययन केंद्र	अर्हकारी परीक्षा में योग्यता	12 वीं / II पीयूसी (विज्ञान क्षेत्र) **	250
स्नातक कार्यक्रम						
4	बी.एएसएलपी	4 वर्ष	68	अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर	12 वीं / II पीयूसी (पीसीएम / बी)	800
5	बी.एड.स्पे.एजु (एचआई)	2 वर्ष	22	स्नातक अंकों के आधार पर	यूओएम द्वारा मान्यता प्राप्त कोई भी डिग्री	400
स्नातकोत्तर कार्यक्रम						
10	एम.एससी (एस.एल.पी)	2 वर्ष		अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर	बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी्	1300
11	एम.एससी(श्रवणविज्ञान)	2 वर्ष	44	अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर	बी.एससी (वाक् तथा श्रवण)/बी.एएसएलपी्	1300
12	एमएड.स्पे.एजु (एचआई)	2 वर्ष	22	अखिल भारतीय आइश प्रवेश परीक्षा में योग्यता के आधार पर	बी.एड (एचआई) / बीएसएड (एचआई) / बी.एड.स्पे.एजु (एचआई)	650
डॉक्टोरल कार्यक्रम						
13	पीएच.डी (एस.एल.पी) - जेआरएफ	3 वर्ष	09	यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू	एम.एससी (एस.एल.पी) / एम.एससी(श्रवणविज्ञान) / एम.एससी (वाक् तथा श्रवण) / एमएएसएलपी, 1 वर्ष के कार्य अनुभव के साथ	1 वर्ष - 20,000/- 2 वर्ष - 22,000/- 3 वर्ष - 25,000/- + एच.आर.ए. जैसा लागू हो; आकस्मिकता अनुदान 20,000/- प्रति वर्ष
14	पीएच.डी (श्रवण विज्ञान) - जेआरएफ	3 वर्ष	09	यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू	एम.एससी(श्रवणविज्ञान) / एम.एससी (वाक् तथा श्रवण) / एमएएसएलपी, 1 वर्ष के कार्य अनुभव के साथ	
15	* पीएच.डी (वाक् तथा श्रवण)			यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू	एम.एससी (एस.एल.पी) / एम.एससी(श्रवणविज्ञान) / एम.एससी (वाक् तथा श्रवण) / एमएएसएलपी, 1 वर्ष के कार्य अनुभव के साथ	
16	* पीएच.डी (स्पेशल एजुकेशन)			यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू	मैसूरु विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार	
17	* पीएच.डी (लिंग्विस्टिक्स)			यूओएम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा तथा इंटरव्यू	मैसूरु विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार	
पोस्ट डॉक्टोरल कार्यक्रम						
18	आइश पोस्ट डॉक्टोरल फ़ेलोशिप	2 वर्ष	2	इंटरव्यू	वाक्, भाषा और / या श्रवण विज्ञान के क्षेत्र में एक मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से पीएच.डी	35,000/- + एच.आर.ए. जैसा लागू हो; आकस्मिकता अनुदान 50,000/- प्रतिवर्ष

* **छात्रवृत्ति के बिना**

अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान

मानसगंगोत्री, मैसूर-06, भारत

+91-0821 2502000 / 2502100

director@aiishmysore.in

aiishmysore.in